हिन्दी

(बसंत)(पाठ 5)(विजय तेंदुलकर– पापा खो गए)
(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

नाटक से

प्रश्न 1:

नाटक में आपको सबसे बुद्धिमान पात्र कौन लगा और क्यों ?

उत्तर 1:

नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ लगा क्योंकि उसके पास हर जगह का समाचार रहता था और वह घूम–घूम कर सबको खबर देता था। उसे अच्छे–बुरे की पहचान थी और वही अपनी सूझबूझ से दुष्ट व्यक्ति से बच्ची को बचाता है और उसे सही सलामत घर पहुँचाने की तरकीब भी वही सोचता है ।

प्रश्न 2:

पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई ?

उत्तर 2:

खंबा षुरू–षुरू में अपनी अकड़ के कारण वह पेड़ से नहीं बोलता था । उसे अपने ऊपर घमंड था वह पेड़ को कुछ भी नहीं समझता था । एक दिन घनघोर बारिष और तेज हवा के कारण वह खंबा पेड़ पर गिर पड़ा पर पेड़ ने सरलता दिखाते हुए उससे कुछ नहीं कहा उसकी इसी सरलता को देखकर खंबे को अपने ऊपर लज्जा आई और उसकी दोस्ती उस पेड़ से हो गई ।

प्रश्न 3:

लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे ?

उत्तर 3:

लैटर बक्स लाल रंग से रंगा हुआ था , उसके रंग के कारण ही सब उसे ताऊ कहकर पुकारते थे ।

प्रश्न 4:

लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है ?

उत्तर 4:

लाल ताऊ सबसे अलग पढ़ा–लिखा और अपने में ही हर समय मस्त रहने वाला था । वह हर समय अकेले ही भजन गुनगुनाता रहता था । इसीलिए वह बाकी पात्रों से भिन्न है ।

प्रश्न 5:

नाटक में बच्ची को बचाने वाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र है। उसकी कौन–कौन सी बातें आपको मजेदार लगीं ? लिखिए।

उत्तर 5:

नाटक में एक ही सजीव पात्र है और वह है कौआ जो ताऊ के भजनों की आवाज को सुनकर उठ जाता है और नींद खराब होने पर चिढ़कर ताऊ से उसका बोलना अच्छा लगता है । वही भूत–भूत चिल्लाकर दुष्ट आदमी से बच्ची को बचाता है और उसी के कहने पर लाल ताऊ ने पापा खो गए पोस्टर लिखा था , उसकी यही सब बातें मजेदार लगीं ।

प्रश्न 6:

क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे ?

उत्तर 6:

लड़की बहुत छोटी और नादान थी वह अपना नाम पिता का नाम और घर का पता भी ठीक से नहीं बता पा रही थी इसीलिए सभी पात्र मिलकर भी उसे घर तक नहीं पहुँचा पा रहे थे ।

नाटक से आगे

प्रश्न 1:

अपने–अपने घर का पता लिखिए तथा चित्र बनाकर वहाँ पहुँचने का रास्ता भी बताइए।

उत्तर 1:

बच्चे अपने अनुसार अपने घर का पता और चित्र बनाकर कक्षा में प्रस्तुत करेंगे ।

प्रश्न 2:

मराठी से अनूदित इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' क्यों रखा गया होगा ? अगर आपके मन में कोई दूसरा शीर्षक हो तो सुझाइए और साथ में कारण भी बताइए।

उत्तर 2:

नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' इसलिए रखा गया क्योंकि इसमें एक ऐसी बच्ची की कहानी है जो बहुत छोटी है और अपने घर का पता अपना नाम और अपने पिता नाम बताने में असमर्थ है नाटक के पात्र लाल ताऊ के द्वारा तैयार किए गए पोस्टर के आधार पर पुलिस उस बच्ची को उसके घर तक पहुँचा देती है । इस पाठ का अन्य शीर्षक बच्ची खो गई भी हो सकता है ।

प्रश्न 3:

क्या आप बच्ची के पापा को खोजने का नाटक से अलग कोई और तरीका बता सकते हैं ?

उत्तर 3:

बच्ची को खोजने के अन्य साधन भी हो सकते हैं जैसे उकी फोटो को गुमशुदा के विज्ञापन के साथ अखबार में छापना , रेडियो , टीवी पर तथा सोशल मीडिया पर उसकी गुमशुदगी का प्रचार कर खोज सकते हैं।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1.
अनुमान लगाइए कि जिस समय बच्ची को चोर ने उठाया होगा वह किस स्थिति में होगी? क्या वह पार्क/ मैदान में खेल रही होगी या घर से रूठकर भाग गई होगी या कोई अन्य कारण होगा?

उत्तर-
पाठ के अनुसार जिस समय बच्ची को चोर ने उठाया था तब वह सो रही थी।

प्रश्न 2.
नाटक में दिखाई गई घटना को ध्यान में रखते हुए यह भी बताइए कि अपनी सुरक्षा के लिए आजकल बच्चे क्या या कर सकते हैं? संकेत के रूप में नीचे कुछ उपाय सुझाए जा रहे हैं। आप इससे अलग कुछ और उपाय लिखिए।

- समूह में चलना
- एकजुट होकर बच्चा उठाने वालों या ऐसी घटनाओं का विरोध करना
- अनजान व्यक्तियों से सावधानीपूर्वक मिलना।

उत्तर-
अन्य उपाय

- पने घर का पता एवं माता-पिता का नाम एवं फ़ोन नं० अपने डायरी में लिखकर साथ रखना चाहिए। अकेले सुनसान या अपरिचित जगह पर नहीं जाना चाहिए।
- अपने आस-पास आने-जाने वाले लोगों पर निगाह रखना एवं हमेशा तैयार रहना।
- किसी भी गतिविधि पर थोड़ा भी शक होने पर शोर मचाना और माता-पिता या पास के किसी बड़े व्यक्ति को इसकी जानकारी देना।

भाषा की बात

प्रश्न 1.
आपने देखा होगा कि नाटक के बीच-बीच में कुछ निर्देश दिए गए हैं। ऐसे निर्देशों से नाटक के दृश्य स्पष्ट होते हैं, जिन्हें नाटक खेलते हुए मंच पर दिखाया जाता है, जैसे सड़क/रात का समय, दूर कहीं कुत्तों की भौंकने की आवाज़। यदि आपको रात का दृश्य मंच पर दिखाना हो तो क्या, क्या करेंगे, सोचकर लिखिए।

उत्तर-
अंधकार फैलाना यानी हलकी नीली रोशनी करना, आकाश में तारों और चाँद का चमकना। झिंगुरों की आवाज और रह रहकर कुत्ते के भौंकने की आवाज़ भी उत्पन्न की जा सकती है।

प्रश्न 2.
पाठ को पढ़ते हुए आपका ध्यान कई तरह के विराम-चिह्नों की ओर गया होगा। नीचे दिए गए अंश से विराम चिह्नों को हटा दिया गया है? ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उपयुक्त चिह्न लगाइए।
मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी अरे बाप रे वो बिजली थी या आफत याद आते ही अब भी दिल धक धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था खंभे महाराज अब जब कभी बारिश होती है और तो मुझे उस रात की याद हो आती है अंग थर-थर काँपने लगते हैं।

उत्तर-
मुझ पर भी एक रात आसमान में गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी। अरे बाप रे! वो बिजली थी या आफ़त। याद आते ही अब भी दिल धक-धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी, वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था खंभे महाराज। अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है, अंग थर-थर काँपने लगते हैं।

प्रश्न 3.
आसपास की निर्जीव चीज़ों को ध्यान में रखकर कुछ संवाद लिखिए, जैसे

- चॉक का ब्लैक बोर्ड से संवाद
- कलम का कॉपी से संवाद
- खिड़की का दरवाज़े से संवाद

उत्तर-
चॉक का ब्लैक बोर्ड से संवाद-
चॉक-आह ! यह जीवन भी कोई जीवन है।
ब्लैक बोर्ड-क्या हुआ चॉक भाई ।
चॉक-मुझे तो तुम पर घिसना अच्छा लगता है क्योंकि जब-जब मुझे शिक्षक घिसने के लिए उठाता है मुझे लगता है कि मैं उनका हथियार हूँ। कई बौद्धिक शब्दों का निर्माण मुझ पर होता है।
ब्लैक बोर्ड-अरे मेरा पेट, दूसरी तरह का होता है। उसमें चमक नहीं होती। हम दोनों के बिना ही शिक्षक का काम नहीं चल सकता।

कलम का कॉपी से संवाद-
कलम-कॉपी! क्या मेरा तुम पर घिसे जाना तुम्हें अच्छा लगता है।
कॉपी-बहन! जब तुम्हारे द्वारा छात्रों या अन्य लोग मुझ पर सुंदर-सुंदर शब्द लिखते हैं तो मैं काफ़ी

खुश होती हूँ।
कलम-सच ! बहुत अच्छी बात है।
कॉपी-लेकिन अगर किसी का अक्षर खराब होता है या स्याही मुझ पर फैलाता तो मुझे बुरा लगता है।
कलम-मैं ऐसा बिलकुल नहीं चाहती लेकिन कई बार मुझे सावधानी से चलाया नहीं जाता तो ऐसा होता है।
कॉपी-मुझे तो तुम पर गर्व है क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा होना ही अधूरा है। तुम्हारे बिना मेरी कोई उपयोगिता नहीं है। मैं तुम्हारा आभारी हूँ।
कलम-ऐसा मत बोलो, तुम्हारे बिना मेरी भी कोई उपयोगिता नहीं है।

खिड़की और दरवाजे में संवाद-
खिड़की-वाह! क्या बात है दरवाज़े भाई ? आजकल बड़ी शोर मचा रहे हो।
दरवाज़ा-क्या कहूँ बहन, खुलते बंद होते मेरे तो कब्ज़े हिल गए हैं। दर्द से चीख निकल जाती है।
खिड़की-कल तक तो आप ठीक थे।
दरवाज़ा-बहन क्या कहूँ, यह सब नटखट बच्चे की करतूत है। इतनी जोर से धक्का मुझे मारा कि मैं सर से पाँव तक हिल गया और बड़े जोर की चोट आई।
खिड़की-बच्चा है भाई! क्या करोगे?
दरवाज़ा-अरे, मेरा क्या दर्द कम होगा और किसे परवाह है मेरे दर्द की ?
खिड़की- भैया, तुम तो लगता है ज्यादा ही बुरा मान गए।
दरवाज़ा-बुरा मानने की बात ही है।
खिडकी-हिम्मत रखो। सब ठीक हो जाएगा।

प्रश्न 4.
उपर्युक्त में से दस-पंद्रह संवादों को चुनें, उनके साथ दृश्यों की कल्पना करें और एक छोटा सा नाटक लिखने का प्रयास करें। इस काम में अपने शिक्षक से सहयोग लें।

उत्तर-
विद्यार्थियों के स्वयं करने योग्य।